आज़ादी का अमृत महोत्सव

गंगा-जमुनी तहज़ीब

(हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एकता)

संपादक

डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

गंगा-जमुनी तहज़ीब

(हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एकता)

संपादक

डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

संकल्प प्रकाशन

कानपुर (उ.प्र.)

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

प्रथम संस्करण, 2022
ISBN : 978-93-91435-23-3

पुस्तक : गंगा-जमुनी तहज़ीब
(हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एकता)

संपादक : डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**
1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

कॉपीराइट © : प्रकाशक

मूल्य : 495/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रक : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

समर्पण

"आज़ादी के अमृत महोत्सव" के
उपलक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना से संबधित
उन सभी साहित्यकारों
को
सादर...

अनुक्रम

1.	गंगा जमुनी तहजीब और राष्ट्रीय एकता एक सैद्धांतिक विवेचन **डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे**	13
2.	राष्ट्र को अर्पित वीरांगना झलकारीबाई का शौर्य **प्रो. डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार**	19
3.	गंगा-जमना तहजीब **रश्मि संजय श्रीवास्तव (रश्मि लहर)**	23
4.	गंगा-जमुनी तहजीब की साझी विरासत के वाहक... 'मौलाना हसरत मोहानी' **डॉ. शेखर पांडुरंग घुंगरवार**	30
5.	हिंदुस्तान की गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतीक 'फिराख गोरखपुरी' **डॉ. दीपक विनायक पवार**	35
6.	संत काव्य में सामाजिक समन्वयक का स्वर **प्रो. डॉ. सुभाष क्षीरसागर**	39
7.	भारतीय संस्कृति का मूल आधार – गंगा जमुनी तहजीब **डॉ. शेख शहेनाज अहेमद**	44
8.	गंगा-जमुनी तहज़ीब की बेजोड़ मिसाल : ओ जम्याई नई **डॉ. निम्मी ए. ए.**	51
9.	गंगा-जमुनी तहजीब मिथक या सच्चाई **जवाहरलाल राठोड**	58
10.	माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में वर्णित राष्ट्रीय एकता की भावना **रंजिनी जी. नायर**	67
11.	'जिस लाहौर नइ देख्या ओ जम्याइ नइ' में गंगा-जमुनी तहज़ीब **डॉ. रेविता कावळे**	72
12.	हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति का समन्वित रूप **डॉ. ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे**	77
13.	राष्ट्रीय एकता का यथार्थ स्वरूप **डॉ. भावना कमाने**	81

7.

भारतीय संस्कृति का मूल आधार- गंगा जमुनी तहजीब

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

"राम, अर्जुन, अशोक, अकबर की हम है संतान,
महान सारे जग में हमार महान हिंदुस्तान।"

बचपन में स्कूल में पढ़ी कविता की पंक्तियाँ याद आ गयी। इन पंक्तियों को देखने के बाद सच मे ऐसा लगता है कि हम एक–दूसरे से कितने करीब है। हमारे नाम अलग है पर हम हिंदुस्तान की संतान है। हिंदुस्तान की खूबसूरती है इसकी गंगा–जमुनी तहजीब। अनेकता में एकता और आपसी भाईचारा। हालांकि, आजकल इसी खूबसूरती को खत्म करने में भी कुछ लोग लगे हुए है और जिन्हें देखकर ये लगता है कि जो ताना–बाना इस देश में आपसी भाईचारे का है वो इतनी आसानी से टूटने वाला नहीं है।

जब भी हमारे देश में सौहार्द की शांती की बात कही जाती है, तो दो समुदायों के बीच प्रेम की बात होती है या जब भी कभी दो समुदायों के बीच किसी भी प्रकार की टकराहट या नफरत की बात होती है, तब एक शब्द युग्म बार–बार हमारे सामने आता है। गंगा–जमुनी तहजीब। बहुत जोर–शोर से इस गंगा–जमुनी तहजीब को बचाने और उसको कायम रखने की वकालत की जाती है।

गंगा–जमुनी तहजीब मुलतः एक उर्दू उपयोग में आने वाला शब्द है जो की गंगा और यमुना नदी के किनारे बसे हिंदू और मुस्लिमों के लिए प्रयुक्त होता है। बाबर और औरंगजेब युग के अंत के बाद अवध क्षेत्र में इस शब्द या संस्कृति की शुरूवात हुई थी जो कि भारत की संस्कृति का केंद्र है। गंगा–जमुनी तहजीब का केंद्र है प्रयाग, लखनपुर, कानपुर, आयोध्या और बनारस जमुना के किनारे होने से दिल्ली भी इसी केंद्र में आता है। और इन्हीं क्षेत्र से गंगा–जमुनी तहजीब स्थापित हुई। उसकी शुरूवात अवध की निजाम शादम खान जो पारसी मूल से थी उन्होंने 1724 में की और सौहार्द स्थापित किया था।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण वह जिस समाज में रहता है, उसका खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार, बोलने का तरीका, कला साहित्य सभी उसके संस्कृति के अंतर्गत आते है। संस्कृति का सामान्य अर्थ परिष्कृत

करना होता है। वह मानव को परिष्कृत करती है, उसके सोंचने, समझने की शक्ति का विस्तार करती है। संस्कृति के माध्यम से हम संबंधित समाज के ज्ञान, चिंतन, शिति–रिवाज और परंपराओं को जान सकते है। हिंदी साहित्य कोश में संस्कृति को इस रूप में परिभाषित किया गया है, "संस्कृति का अर्थ चिंतन तथा कलात्मक सर्जन की वे क्रियाएँ समझनी चाहिए, जो मानव व्यक्तित्व के साक्षात उपयोगी न होते हुए उसे समृद्ध बनाने वाली है।"[1] मानव समाज के परिवर्तन के साथ संस्कृति में भी बदलाव आता गया। सर्वप्रथम जब आग और पहिए का अविष्कार हुआ उसे आदिम संस्कृति का नाम दिया गया। आगे चलकर प्रदेशों के नाम से संस्कृति का नाम दिया गया। आगे चलकर प्रदेशों के नाम से संस्कृति जानी जाने लगी जैसे युरोपियन संस्कृति, अरब संस्कृति, ईरानी संस्कृति, भारतीय संस्कृति आदि। कालांतर में यह संस्कृतियाँ धर्मो में बंट गई।

भारतीय संस्कृति की बात की जाए तो वह आदर और उदार भाव के साथ सभी को अपने अंदर समाहित कर लेती है। हमारे भारत में दुनियाँ से विविध जगह से विविध उद्देश्य से कई जातियाँ आई और वे सब यहीं रच–बस गई। अब यह तय करना मुश्किल हैं कि इनमें मूल निवासी कौन है? विदेशी कौन है। इस पर म. गांधी का एक कथन याद आता है– "मेरा दृढ़ मत है कि जो बहुमूल्य रत्न हमारी संस्कृति के पास है, वह किसी अन्य संस्कृति के पास नहीं है।"[2]

ये विदेशी संस्कृतियाँ भारत आने के पश्चात यहां की परिस्थितियों से प्रभावित होकर पानी में नमक की तरह घुल मिल गई हैं। "अतः भारतीय संस्कृति भारतीय हैं। यह पूरी तरह न हिंदू है, न इस्लामी और न कोई अन्य।"[3] हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि दिनकर जी ने अपनी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय में भारतीय साँझा संस्कृति का बीज बोने वाला अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल को मानकर उसका नायक अमीर खुसरो को बनाया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस एकता पर कुछ संकीर्ण लोगों द्वारा सवाल उठाए जाते है। इसका प्रमुख कारण इस्लाम से हिंदुओं की अनभिज्ञता को माना जाता है। इस संदर्भ में मानवेंद्र नाथ रॉय ने लिखा है– "संसार की कोई भी सभ्य जाति इस्लाम के इतिहास से उतनी अपरिचित नहीं है जितनी हिंदू है और संसार की कोई भी जाति इस्लाम को इतनी घृणा से भी नहीं देखती जितनी घृणा से हिंदू देखते है।"[4] इस घृणा का खंडन करना आवश्यक है जो हमारे देश की एकता व अखंडता के लिए घातक है।

गंगा जमुनी तहजीब की कई मिसाले आज भी चली आ रही है। महोबा जिले में हिंदू–मुस्लिम भाईचारा, आपसी सौहार्द और गंगा–जमुनी तहजीब की मिसाल आज भी 100 सालों से कायम है। आज भी वहां के हिंदु–मुस्लिम एक–दूसरे के जनाजे को कंधा देते आ रहे हैं। होली पर मुस्लिम भाई रंग खेलते है, एक–दूसरे के सुख–दुख में हाथ बंटाते है। हिंदू भाई ताजिया देखने जाते है,

तो मुस्लिम भाई रामनवमी के जुलूस में शामिल होकर भाईचारे की मिसाल देते है। महोबा आल्हा-ऊदल और उनके गरू ताला सैयद के आपसी सौहार्द का प्रतीक है। अयोध्या मामले का फैसला आने के बाद संघ की शाखा के शरद कुमार ऊर्फ दाऊ विपारी और काजी-ए-शहर ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल पेश की। विकासखंड चरखारी के सालट गांव में हिंदू समुदाय के लोगों ने मजार की छत और बाउंड्री तौयार कराकर हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया। इतना ही नहीं, मजारपर उर्स के लिए हर साल हिंदू भाई चंदा देते है और पूरे गांव के साथ उर्स में शामिल होते है। मुस्लिम युवतियाँ नवरात्री मे नौ दिन व्रत रखती हैं और आरती करती हैं। धार्मिक कार्यक्रमों मे शामिल होकर हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल पेश करती है।

गंगा-जमुनी तहजीब और एक अनोखी मिसाल है। अमीनाबाद स्थित पड़ाईन की मस्जिद। जिसे बादशाह बुरहानुल मुल्क की बेगम खदीजा खानम ने आज पांच सौ साल पहले बनवायी थी। यह बेगम हिंदू परिवार की महिला थी। इस मस्जिद के मौलवी हुसैन हैदरी के कथनानुसार, "बुरहानुल मुल्क करीब 475 साल पहले जंग से लौट रहे थे। उन्होंने अपना पड़ाव इसी इलाके में डाला। इसके बाद उनकी शादी यहीं की एक महिला से हुई, जिनका नाम बाद में खदीजा खानम रखा गया। खदीजा खानम के कहने पर ही यह मस्जिद बनाई गयी। बादशाह के पड़ाव के कारण इसका नाम पड़ाईन की मस्जिद रखा गया।"[5] यहां पर महिलाओं के लिए नमाज अदा करने का विशेष इंतजाम है। इसकी बनावट मुगलकाल की कारीगरी की तरह झलकती है।

गंगा-जमुनी तहजीब की आँखों को ठंडक पहुँचाने वाली और एक मिसाल है मुकेश श्रीवास्तव उर्फ मुहम्मद जावेद और महम्मद इश्तियाक उर्फ संजय की दोस्ती। दोनों उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ शहर में रहते हैं। ईद के मौके पर जब 'आजतक' की टीम प्रतापगढ़ गई तो उन्होंने इन दोनों को देखा। उनसे मुलाकात की तब उन्होंने बताया की, मुकेश सन् 1992 से लगातार ईद-बकरीद पर अपने मुस्लिम दोस्तों के साथ ईदगाह पर नमाज़ पढ़ने जाते हैं। मुकेश का कहना है, "हिंदू-मुस्लिम सब एक हैं, सब मजहब एक है, अगर हम मंदिर जा सकते हैं तो मस्जिद क्यों नहीं।"[6] ऐसा नहीं है कि मुकेश ने किसी मुस्लिम दोस्त के कहने से ऐसा किया है। उनका मानना है मेरे मस्जिद जाने से कौमी एकता का अच्छा संदेश देश के लिए जाता है। ऐसा करके उन्हें खुशी मिलती है। मुकेश के बचपन के मुस्लिम दोस्त भी उनके साथ मंदिर जाते हैं। उनमें से मुहम्मद इश्तियाक उर्फ संजय सारे प्रतापगढ़ में यह संजय नाम से मशहूर है। मुकेश और संजय की दोस्ती मिसाल है। इनके बाकी दोस्त अफ़जल और अकील भी शहर से बाहर रहते हैं लेकिन हिंदू-मुस्लिम त्यौहार पर सब साथ जमा होते है और साथ मिलकर त्यौहार मनाते है। इन सभी का कहना है कि इंसानियत ही सबसे बड़ा मजहब

है और कोई हमारे बारे में कुछ भी सोचे वो इसी पर कायम रहने की बात करते हैं।

कहने का तात्पर्य यही कि, हिंदुस्तान की इसी मजबूती को कमजोर करने की कोशिश हो रही है। धार्मिक उन्माद और नफ़रत फैलाने की कोशिश दिन-ब-दिन की जा रही है। ऐसे माहौल में इस तरह की मिसालें हमारी आँखों को ठंडक पहुँचाती है और उम्मीद जगाती है कि गंगा-जमुनी तहजीब भारत की एकता का प्रतीक है।

गंगा-जमुनी तहजीब की साहित्य के क्षेत्र में बात की जाए तो हमें दिखाई देता है कि, ऐसे बहुत से हिंदी और उर्दू रचनाकार है जिनकी रचनाएँ उर्दू से हिंदी में अनुदित हुई हैं। कृष्ण चंदर हिंदी में अनूदित होकर ही बहुत लोकप्रिय हुए। इसी तरह कर्तुल एन. हैदर, सआदत हसन मंटो, इकबाल, गालिब, मीर से लेकर जौन एलिया और इंतजार हुसैन तक की ढेर सारी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद हुआ है। और हो भी रहा है। हिंदी के लोगों ने बगैर किसी भेदभाव के उनको अपनाकर उनकी रचनाओं को भी स्वीकार किया है। एक अनुमान के मुताबिक गालिब के जितने दीवान हिंदी में प्रकाशित हैं उतने दीवान तो उर्दू में भी प्रकाशित नहीं है। अहमद फराज की ग़ज़लें और शायरी हिंदी में 'असासा' नाम से प्रकाशित हुई।

वैसे तो भारतीय संस्कृति के कई रूप है, जिनमें मुख्य रूप से गंगा-जमुनी संस्कृति का नाम आता है। इस भारतीय संस्कृति की धरोहर गंगा-जमुनी तहजीब को अभिव्यक्त करने का प्रयास हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा ने अपने 'पारिजात' उपन्यास में किया है जिसे सन् 2016 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस उपन्यास में नासिरा जी ने हिंदू परिवार व मुस्लिम परिवार की मिली-जुली दासतां को बयां किया है। उपन्यास में ऐसी विधवाओं के दर्द की दास्तान है जो लोग अलग-अलग धर्मों की होते हुए एक-सा दर्द झेल रही है।

उपन्यास में तीन मित्रों प्रह्लाद दत्त, बसारत और जुल्फिकार की कहानी है, इन तीनों में घनिष्ठ मित्रता है। इनकी मित्रता धर्म की संकीर्णता से ऊपर है। यह सभी लोग मोहर्रम हो या जन्माष्टमी सभी साथ मिलजुलकर मनाते हैं। मोहर्रम में भी ऐसे कई दृश्य देखे जा सकते हैं जो सांझी संस्कृति के रूप में पहचाने जाते हैं। मोहर्रम में जो ताजिये का रूप है वह भारतीय परिवेश के कारण मंदिरनुमा है। कर्बला की जंग पर आँसू हिंदू और मुस्लिम बराबर बहाते हैं। इमाम हुसैन की शहादत मानवता और इंसाफ के लिए दी गई है, इसलिए यह शहादत किसी एक धर्म की न होकर वह साझी शहादत है। मोहर्रम पर पढ़े जानेवाले मर्सिया को इंसानी जज्बातों का नाम दिया गया है। कई जगहों पर ताजिये निकाले जाते हैं उनके आगे हिंदू पानी डालते जाते हैं क्योंकि हजरत इमाम हुसैन प्यासे ही शहीद हुए थे।

उपन्यास में लखनऊ की जगह का चित्रण हुआ है। इसमें साझी संस्कृति का एक उदाहरण हमें मानवता का संदेश देता है, वह यह कि लखनऊ के एक स्थान में इमाम बाडे की तरफ जाते समय ताजियों के रास्ते में एक बुढिया की झोपड़ी हटा दी। उसने ताजिए का रास्ता बदलने नही दिया। मानवता के लिए उसकी कुर्बानी के बदले ताजिये का नाम 'बुढिया का ताजिया' रखा गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि ताजिए में हिंदू-मुस्लिम एकता का दृश्य दिखाई देता है। इसलिए उपन्यास में लेखिका ने बीते समय की बात याद करते हुए कहा है, "बीसवीं सदी के शुरू में हिंदू-मुसलमानों के ताजिए की शक्ल और बनावट में कोई फर्क नही था।"[7]

इस उपन्यास में लखनऊ का जो चित्रण है उससे स्पष्ट होता है कि, लखनऊ में हिंदू-मुस्लिम संस्कृति में कोई फर्क नही पड़ता। यहां पर होली-दीवाली, ईद-मोहर्रम जैसे त्यौहार सब मिलकर मनाते है। मुहर्रम के मातम में सभी हिंदू शामिल होते हैं, कोई पहचाना नही जाता। यह दृश्य जन्माष्टमी के पर्व पर भी दिखाई देता है। लेखिका ने वर्णन किया है, "भाव बड़े चाव से मोनिस, रोहन और काजिम को कृष्ण, राधा, बलराम की तरह सजा रही है। तीनों के बदन नीले सफेद पुते है, पीली धोती और माथे पर रखे सुंदर ताज पर मोर पंख लगा है।"[8] सुमित्रा और फिरदौस एक साथ दीवाली मनाती है और दिए जलाती है। इस प्रकार चूड़ी, टीका, मेंहदी हिंदू-मुस्लिम सुहाग का प्रतीक मानते हैं। जब इमाम हुसैन शहीद होते है तो दोनों स्त्रियाँ शोक प्रकट करती हैं।

मोहर्रम का सांस्कृतिक चेहरा जिस तरह भारतीय गांव की परंपरा व रीति-रिवाज में रचा बसा है, वह सुखद आश्चर्य पैदा करता है। यह त्यौहार किसी विशेष धर्म की पहचान होने पर भी वह उसी की न रहकर राष्ट्र व विश्व की धरोहर बन जाती है। जैसे अजमेर शरीफ में ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, कर्नाटक गुलबर्गा में ख्वाजा बंदानवाज की दरगाह, मुंबई में हाजी मलंग की दरगाह जहां पर हर धर्म का बाशिंदा सर झुकाता हुआ दिखाई देता है। श्रद्धा को धर्म में नहीं बांट सकते। तभी अकबर पैदल संतान प्राप्ती के लिए फतेहपुर सिकरी जाता है तो वहीं राजा बनारस भी वंशी वृद्धि के लिए रामनगर के छोटे इमामबाड़ा तक पैदल चलते हैं। यह श्रद्धा-भक्ति एक है। कर्बला की घटना हो या महाभारत या रामायण वह आम आदमी से काफ़ी नजदीक है, उससे हर व्यक्ति का जज़्बा जुडा हुआ है।

लखनऊ में मोहर्रम की तरह दशहरे में भी हिंदू-मुस्लिम संस्कृति की झलक दिखाई देती है। नवाबों द्वारा शुरू की गई रामलीला जनमानस में इस तरह बस चुकी है चाहे रमजान पडे या मोहर्रम, रामलीला में काम करनेवाले दुनिया भूलकर उसी में डूब जाते है। इस प्रकार हिंदुओं के त्यौहारों में मुस्लिम और मुसलमानों के त्यौहारों में हिंदुओं का जो योगदान है वह काफी प्रसंनीय है।

इसी तरह मुसलमानों ने हिंदू ग्रंथों का अनुवाद किया। कई हिंदुओं ने अपने ग्रंथों का अनुवाद उर्दू-फारसी में करके गंगा-जमुनी तहजीब को और पुष्पित करने का कार्य किया है। हिंदू धर्म की कहानियाँ उर्दू के रंग में रंग गयी। इसकी संगीत की कव्वाली हिंदुस्तान के रंग में घुल गई है।

उपन्यास का मुख्य उद्देश्य हिंदू-मुस्लिम एकता को मजबूत करना रहा है। क्योंकि दोनों आपस में जुड़े हुए है। चाहे कितने भी अराजकतावादी इन्हें अलग करने की कोशिश करें लेकिन यह दोनों मिलकर भारतीय संस्कृति का वास्तविक रूप तैयार करती है। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए इन दोनों को आपस में जुड़े रहना जरूरी है।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार गंगा-जमुनी तहजीब है अगर यह खंडित हो जाती है तो भारतीय संस्कृति का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग भक्तिकाल रहा है, जिसमें भक्त कवियों ने इस हिंदू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वित रूप के दर्शन कराए। हम सभी मनुष्य एक ही मिट्टी से बने हुए है उसे अलग-अलग धर्म में बांट नहीं सकते। क्योंकि सबसे बड़ा धर्म मानवता है इसे प्रत्येक मनुष्य को पालन करना चाहिए। जिससे विश्व में शांति और सद्भाव का विकास हो सके। नासिरा शर्मा का 'पारिजात' उपन्यास भी यही संदेश देता है। लेखिका ने देश की संस्कृति के बिंदुओं को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी भी भक्तिकालीन नायक कबीर की विशेषता को बताते हुए कहा हैं, "अगर 'अल्लाह' शब्द मुस्लिम धर्म का प्रतिनिधित्व करता है और 'राम' शब्द हिंदू संस्कृति का, तो वे उन दोनों को सलाम करने को तैयार है।"

इस प्रकार आलेख के अंत में मैं उस बचपन में सूनी अनाम कवि की कविता से करना चाहूँगी की सच में हमारी गंगा-जमुनी तहजीव, हिंदू-मुस्लिम एकता भारतीय संस्कृति का मूल आधार है और आजन्म होगी।

"ये धरती है शान की धरती।
आन-बान अभिमान की धरती।
भक्ति नीति ज्ञान की धरती।
अवतारों भवगान की धरती।
गीता और कुरआन की धरती।
हमने सब को ज्ञान दिया है हमने दिए भगवान।
महान सारे जग में हिमालय महान हिंदुस्तान।"

कवि की इन पंक्तियों से यही स्पष्ट होता है कि हमारी तहजीव सारी दुनिया में महान है। चाहे कितनी भी शैतानी शक्तियाँ उसे दाग़ करने की कोशिश करें किंतु वह सफल नहीं हो पाएँगे। यहां पर गीता और कुरान का संदेश एक साथ दिया जाता है। हमारी आन-बान-शान और अभिमान है।

संदर्भ

(1) धीरेंद्र वर्मा : हिंदी साहित्य कोश (भाग 1), पृ. 712
(2) आर. के. प्रभु तथा यू. आर. राव – महात्मा गांधी के विचार – पृ. 415
(3) वही, पृ. 416
(4) रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 255
(5) नवभारत टाईम्स् – मे 2019
(6) जागरण – जुलाई 2017
(7) आजतक – 27 जून 2017

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी–विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील, महाविद्यालय
हिमायतनगर, नांदेड
मो. 9404639785